ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। अथर्व0 2/2/1
हे मनुष्यों प्रजाओं में एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य और नमस्करणीय है।
O men of the world ! In this creation God alone is adorable & worthy of worship.

वर्ष 39, अंक 20 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 मार्च, 2016 से रविवार 27 मार्च, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

वैदिक धर्म प्रचार समिति उज्जैन द्वारा वैदिक धर्म के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार, अंधविश्वास एवं पाखण्ड खण्डनार्थ विशाल शिविर

21 अप्रैल 2016 से उज्जैन में शिप्रा तट पर सजेगा सिंहस्थ कुंभ मेला

मेले के अवसर पर वेद प्रचार एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विराट् एवं भव्य आयोजन

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में वैदिक धर्म प्रचार समिति उज्जैन द्वारा वैदिक धर्म के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार, अंधविश्वास एवं पाखण्ड खण्डनार्थ विशाल शिविर 21 अप्रैल 2016 से उज्जैन में शिप्रा तट पर आयोजित सिंहस्थ कुंभ मेले के अवसर पर वेद प्रचार एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विराट् एवं भव्य आयोजन किए जाने का निर्णय लिया गया।

योगिराज श्रीकृष्ण की विद्यास्थली, योगिराज भृर्तृहरी की तपस्थली, महाकवि कालिदास की साधना स्थली, न्यायमूर्ति विक्रमादित्य की पुण्यस्थली-ऐतिहासिक नगरी महर्षि दयानन्द की स्मृति मंजूषा वेदप्रिय नगरी उज्जयनी विश्व के मानचित्र में अपना विशिष्ट स्थान अर्जित किए हुए है। इस नगरी में परम्परागत रूप से सिंहस्थ(कुम्भ) महापर्व मनाया जाता रहा है।

21 अप्रैल 2016 से इस बार प्रारम्भ हो रहे प्रति 12 वर्ष में होने जा रहे सिंहस्थ महापर्व के वास्तविक स्वरूप को हम भूल से गये हैं। मूल रूप से सिंहस्थ महासम्मेलन के रूप में चहुं ओर से साधु, संतों, महात्माओं, संन्यासियों, विद्वानों आदि के द्वारा आध्यात्मिक एवं धर्म सभाओं के माध्यम से राष्ट्रहित चिंतन करने के लिए सम्मिलित होते थे। इस अवसर पर तत्कालीन राजा-महाराजाओं को भी विचार विमर्श हेतु आमंत्रित किया जाता था। जिससे राष्ट्र एवं समाज को उचित दिशा निर्देश मिलता था। किन्तु अब ये चिंतन गौण तथा प्रदर्शन प्रधान बन गया। ऐसी गतिविधियां आज के समाज को समयानुकूल

...शेष पेज 5 पर

सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य ने उज्जैन में मेला परिसर का दौरा कर आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं की विशाल बैठक की जिसमें उज्जैन मेले के संदर्भ में दिशा-निर्देश तैयार किए गए। इस बैठक में उपमंत्री श्री विनय आर्य भी उपस्थित थे।

बैठक में श्री प्रकाश आर्य जी ने देश के सभी आर्यजनों से अपील की कि वे मेले को सफल बनाने में अपनी-अपनी सेवाएं अर्पित करने की कृपा करें। इस सम्बंध में श्री गोबिन्द आर्य जी से मो. 9424012471 पर सम्पर्क करें।

मदर टेरेसा की सेवा का सच

तसलीमा ने क्रिस्टोफर हिचेन्स नामक विद्वान का जिसने टेरेसा पर गंभीर सवाल खड़े किये थे उनका एक यूट्यूब वीडियो का लिंक भी पोस्ट किया जिसका लिंक था ''मदर टेरेसा, नर्क की परी'' अब प्रश्न यह है कि क्या तसलीमा द्वारा लगाये गये आरोप सही हैं? क्योंकि कुछ दिन पहले तसलीमा ने ईसाई समुदाय की पुस्तक बाइबिल पर प्रश्न उठाते हुए कहा था कि "न ही जीसस की माँ कुवांरी थी ना वो खुदा के बेटे थे।

मदर टेरेसा को लेकर वेटिकन द्वारा जारी एक फरमान के बाद विश्व जगत में एक अनोखी गूंज सुनाई दे रही है। जिसका सबसे ज्यादा असर भारत में दिखाई दे रहा है। असर होना लाजिमी भी है क्योंकि मदर टेरेसा ने अपने जीवन का एक तिहाई हिस्सा भारत में ही बिताया था। यहाँ रहकर उसने क्या किया? यह बात भी करीब-करीब सब जानते है क्योकि ईसाइयत के प्रचार-प्रसार जो तरीका टेरेसा ने अपनाया उस से पहले भारत में यह तरीका किसी ने नहीं अपनाया था। मतलब सेवा की आड़ में धर्म परिवर्तन ऐसा हम किसी पूर्वाग्रह से शिकार होकर नहीं लिख रहे हैं। भारत की संसद से भी यहीं आवाजें आ रही हैं और अखबारों के पन्नो से भी।

आज ही कट्टरपंथ और नारी विमर्शो पर अपनी बेबाक राय रखने वाली मशहूर प्रसिद्ध लेखिका तसलीमा नसरीन ने इस बार ईसाई नन और मिशनरी कार्यकारी मदर टेरेसा पर कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए उन्होंने अपने ट्वीट के जरिये कहा मदर टेरेसा फ्राड थीं, वो भ्रष्ट लोगों से पैसा लेकर ईसाइयत का एजेंडा चलाती थी। तसलीमा यहीं नहीं रुकी उसने अपने दूसरे ट्वीट में गंभीर आरोप जड़ते हुए कहा कि, "मदर टेरेसा एक कट्टरपंथी और धोखेबाज थी। अगले ट्वीट में तसलीमा ने क्रिस्टोफर हिचेन्स नामक विद्वान का जिसने टेरेसा पर गंभीर सवाल खड़े किये थे उनका एक यूट्यूब वीडियो का लिंक भी पोस्ट किया जिसका लिंक था ''मदर टेरेसा, नर्क की परी'' अब प्रश्न यह है कि क्या तसलीमा द्वारा लगाये गये आरोप सही हैं? क्योंकि कुछ दिन पहले तसलीमा ने ईसाई समुदाय की पुस्तक बाइबिल पर प्रश्न उठाते हुए कहा था कि "न ही जीसस की माँ कुवांरी थी ना वो खुदा के बेटे थे।

हालाँकि वेटिकन के इस फैसले पर कई लोगों से सवाल खड़े किये है, क्योंकि मदर टेरेसा पर आरोप था कि वो मिशनरीज की भांति सेवा की आड़ में धर्मपरिवर्तन का गन्दा खेल चलाती थी और यहीं उनके जीवन का वास्तविक लक्ष्य था ऐसे तथ्यों की भी कमी नहीं जो यह साबित करते है कि मदर टेरेसा का एजेंडा सेवा नहीं बल्कि ईसाइयत का प्रचार था। क्योकि रोगियों की सेवा, 'दवा और अस्पताल' से भी हो सकती है शरीर यांत्रिक है जिसका इलाज चमत्कार से नहीं औषधियों से किया जाता है। मदर टेरेसा पर आरोप लगे थे कि वह दर्द से कराहते लोगों की सेवा करने के बजाय उन पलों को आनंद पूर्वक देखा करती थी और पीड़ित का कराहना जीसस का किस करना बताती थी। तसलीमा ने वेटिकन के टेरेसा को संत घोषित करने के फैसले पर अफसोस जताते हुए कहा क्या मदर टेरेसा को संत बनाया जायेगा, ऐसी औरत जिसने भ्रष्ट लोगों से पैसा लिया जिसने गरीब व बीमार लोगों को बिना चिकित्सा उपलब्ध करवाए मरने के लिए छोड़ा हो वह अब संत हो जाएगी? जिसने बहुत सारा पैसा होने के बावजूद भी कोलकाता में एक आधुनिक अस्पताल नहीं खोला।

गौरतलब है कि कि मदर टेरेसा ने एक साक्षात्कार में स्वयं इस बात को स्वीकार किया था कि उनका कार्य लोगों को ईसाई धर्म में लाना है। संसद भवन परिसर में भी मदर टेरेसा को लेकर बयानबाजी होती दिखाई दी भाजपा नेता मीनाक्षी लेखी ने संसद भवन परिसर में संवाददाताओं से कहा कि ऐसी टिप्पणियों को राजनीतिक रंग से देने से बचा जाना चाहिए। उन्होंने इस मुद्दे पर कांग्रेस सदस्यों एवं कई अन्य नेताओं के बयानों पर आपत्ति व्यक्त की। भाजपा सांसद ने कहा, ''मेरी ज्योतिरादित्य

...शेष पेज 8 पर

स्वाध्याय

हे वज्रवाले!

न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमं चिकेत।।
-ऋ. 8/2/17; साम. उ. 1/2/3; अथर्व 20/18/2
ऋषिः- मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चागिरसः।। देवता-इन्द्रः।।
छन्दः- गायत्री।।

विनय- हे जगत् के ईश्वर! परम मंगलकारी! मैं जो भी कोई नया कार्य शुरू करता हूं, नया यज्ञकर्म-नया शुभकर्म प्रारम्भ करता हूं तो वह सब तेरा ही नाम लेकर, तेरे ही भरोसे, तेरे ही भरोसे, तेरे ही बल पर शुरू करता हूं। अपने प्रत्येक कार्य का मंगलाचरण मैं तेरे ही आगे झुककर, तेरी ही मानसिक वन्दना करके, करता हूं। हे वज्रवाले! मैं तेरे सिवाय किसी भी अन्य के आगे झुककर, तेरी ही मानसिक वन्दना करके, करता हूं। हे वज्रवाले! मैं तेरे सिवाय किसी भी अन्य के आगे झुककर मंगल नहीं मना सकता, क्योंकि पाप से निवृत्त करने वाला वज्र तो तेरे ही हाथ में है-अनिष्टों, अमंगलों और विभिन्नों का वास्तव में वज्रन कराने वाला वज्र तेरे ही हाथ में है, तो हे व्रजधारिन! मैं किसी अन्य की स्तुति करके क्या पाऊंगा? जो कार्य सचमुच एक माह तो तुम्हारे ही आश्रय से किए जाते हैं और जो मनुष्य सचमुच अपना कर्म सर्वथा तुझे अर्पण करके करते हैं तो वहां पराजय, असफलता या असिद्धि नाम की कोई वस्तु रह ही नहीं जाती। यह बात कईयों को तनिक विचित्र सी लगेगी, किन्तु है सर्वथा सत्य। सचमुच तब सब मंगल-ही-मंगल हो जाता है। यह सब तेरे वज्र का प्रताप है। जो लोग केवल तेरा ही आश्रय लेकर कार्य शुरू करते हैं, सर्वथा त्वदर्पित होते हैं, उनके पास निरंतर जागता हुआ तेरा वज्र उनकी रक्षा करता है, अतः हे परम मंगलकारी वज्रिन्! इस संसार में तु ही एक मात्र स्तुति करने योग्य है। मैं तो तेरी ही स्तुति करना जानता हूं। यदि मैं किसी धनाड्य और पुरुष की स्तुति करूं तो शायद मुझे मेरे कार्य के लिए धन देगा; किसी प्रभावशाली पुरुष की विनती करूं तो शायद मेरे लिए उसका प्रभाव बड़ा सहायक हो जाएगा। परंतु हे जगत के ईश्वर मैं जानता हूं कि यह सब तभी होगा जब तेरी ऐसी इच्छा होगी। संसार के सब प्राणी, सब अमीर-गरीब, सब छोटे-बड़े तेरे ही बनाये हुए पुतले हैं। संसार के बड़े से बड़े पुरुष भी तेरे ही आश्रय पर, तेरी ही इच्छा पर जीवित हैं; तो मैं उन पुरुषों का आश्रय लेकर क्या करूंगा? जब तुझे अभिष्ट होता है कि किसी कार्य में धन, जन, बुद्धि आदि की सहायता मिले तो वह कहीं न कहीं से मिलती ही है। बल्कि हम देखते हैं कि धन, जन, मान आदि पाने के लिए जिन पुरुषों के लिए हम भरोसा करते हैं, निरर्थक खुसामद करते हैं, वहां से हमें कुछ भी नहीं मिलता; किन्तु किसी दूसरी अनाशातित जगत से वैसी सब सहायता मिल जाती है, अतः मैं तो अपने कार्यों के प्रारंभ में किसी भी अन्य का भरोसा नहीं करता, मैं तो केवल तेरा ही पल्ला पकड़ना जानता हूं, मैं तो तेरी ही स्तुति करना जानता हूं।

शब्दार्थ - वज्रिन- हे वज्र वाले! मैं अपसः- कर्म के नविष्टौ-प्रारंभ में अन्यत् घ ईम्-अन्य किसी की भी न आपपन-स्तुति नहीं करता तव इत् उ-तेरी ही स्तोमम्-स्तुति करना चिकेत-जानता हूं।

साभार : वैदिक विनय
पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

"भारत माता की जय" और जय ही रहेगी

भारत देश में इन दिनों विवादों की एक लू सी चल रही है जिसकी चपेट में देश की राजनीति मीडिया, नेता और अभिनेता आ गये और देश की रक्षा करने वाले जवान, अन्न पैदा करता किसान, देश का गरीब, मजदूर, व्यापारी मूक होकर देख रहा है। अभी पिछले दिनों ओवैसी ने अपने एक बयान में कहा कि यदि कोई मेरी गर्दन पर चाकू भी रख दे तब भी मैं भारत माता की जय नहीं कहूँगा। हालाँकि उनके इस बयान की उदार और बुद्धिजीवी मुस्लिम जगत ने काफी आलोचना की जावेद अख्तर ने तो उन्हें गली मोहल्ले का नेता तक बता डाला और तीन बार ऊँचे स्वर में भारत माता की जय का संसद के सदन में उद्घोष कर कट्टरपंथी मुस्लिमों को करारा जवाब दिया। किन्तु इसके बाद भी यह विवाद थमता दिखाई नहीं दे रहा है।

हैदराबाद के एक इस्लामिक ऑर्गेनाइजेशन जामिया-निजामिया ने भारत माता की जय बोलने के खिलाफ फतवा जारी किया है। ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक, इस्लाम मुस्लिमों को इस नारे की इजाजत नहीं देता। इंसान ही इंसान को जन्म देता है, धरती नहीं दारुल उलूम इफ्ता और इस्लामिक फतवा सेंटर के मुफ्ती अजीमुद्दीन ने कहा, ''कुदरत के कानून के मुताबिक एक इंसान ही इंसान को जन्म दे सकता है।'' उन्होंने आगे कहा, लैंड ऑफ इण्डिया भारत को मां कहना ठीक नहीं है। एक इंसान की मां एक इंसान ही हो सकती है, किसी धरती का कोई टुकड़ा नहीं।"

फतवे का जिक्र करते हुए मुफ्ती ने कहा, इस्लामिक रूल्स के मुताबिक हम भारत की धरती को भारत माता नहीं कह सकते। मौलवी जी के अनुसार इन्सान का जन्म बायोलॉजी पर आधरित है। सही बात है कि आप लोगों ने विज्ञान को स्वीकार तो किया जब यह स्वीकार किया तो क्या यह स्वीकार कर सकते हैं कि किताबें आसमानों से नहीं उतरती? 'अल आरा' 'प्रथवी गोल है, आसमान सात नहीं होते? यदि इन्सान को इन्सान जन्म देता है तो खुदा ने मिट्टी से आदम को कैसे बनाया? बहरहाल बहुत सारे विवादित प्रश्न निकलकर आयेंगे।

हम सबके लिए यह देश हमारी मातृभूमि है, माँ है, इसलिए हम 'भारत माता की जय' बोलते हैं। दरअसल ओवेसी को 'भारत माता की जय से कोई समस्या नहीं है। देश से भी उन्हें कोई समस्या नहीं है। हिन्दुओं से भी उन्हें कोई समस्या नहीं है। वास्तव में ओवैसी की समस्या ये है कि वे महज एक व्यक्ति नहीं बल्कि 'विचारधारा' हैं। यह 'विचारधारा' घोर साम्प्रदायिक है और यह सिर्फ ओवैसी की ही नहीं है, बल्कि यह विचारधारा सिमी की भी है। यह विचारधारा हरकत-उल अंसार की भी है ,यह कश्मीर में दुख्ताराने हिन्द की भी है। कश्मीर में पत्थरबाजी करने वालों की भी है, केरल में मुस्लिमलीग की है। आंध्र, तेलांगना में आईएम और ओवैसी की है। वही विचारधारा कभी सैयद शाहबुद्दीन की भी रही है। ऐ आर अंतुले, गनीखान चौधरी, इमाम बुखारी, आजम खाँ ने इस विचारधारा का जमकर भोग किया है। ममता, मुलायम, लालू और नीतीश ने भी इसका स्वाद चखा है। देश विभाजन के बाद-पाकिस्तान बन जाने के बाद इस विचार धारा से ही पाकिस्तान बना था। लेकिन भारत को अपना वतन मानने वाले जावेद अख्तर, निदा फाजली, अमजद अली खान जैसे करोड़ों मुसलमानों को जब कुछ स्वार्थी लोग 'दारुल हरब' का ज्ञान बाँटने की जुर्रत करते हैं तो उन्हें औकात बता दी जाती है। जैसेकि जावेद अख्तर ने राज्य सभा में ओवैसी के नकारात्मक बयान पर उसे आइना ही नहीं दिखाया बल्कि जावेद अख्तर ने ओवैसी को गली मोहल्ले का नेता बताकर उसकी असल औकात दिखा दी है।

जापान के बारे में एक कथा प्रचलित है कि जापान की स्कूलों में बच्चों को तीन प्रश्नोत्तर पढ़ाये जाते हैं। पहला प्रश्न यह है कि आप सबसे ज्यादा किसे मानते हैं उत्तर भगवान बुद्ध को, दूसरा प्रश्न-अगर कोई भगवान बुद्ध पर हमला कर दे तो आप क्या करेंगे! उत्तर हमला करने वाले का सिर उड़ा देंगे तीसरा प्रश्न अगर भगवान बुद्ध ही जापान पर हमला कर दे तो क्या करोगे उत्तर हम भगवान बुद्ध का ही सिर उड़ा देंगे, अर्थात् जापान देश में सिखाया जाता है कि देश, धर्म से भी बढ़कर है और कोई भी धर्म और भगवान देश से बड़ा नहीं होता। अगर भगवान भी देशद्रोह करने को बोले तो भी मत करो और हमारे यहाँ भारत माता की जय बोलने से लोगों का धर्म खतरे में पड़ रहा है और हंगामा हो रहा है।

-सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

वे आग्नेय पुरुष, वे धर्म-दीवाने

महर्षि दयानन्द के जीवनकाल में ही उनकी कीर्ति पाताल देश (अमरीका) में पहुंच गई। ऋषि दयानन्दजी के बलिदान के पश्चात् आर्य समाज के सेवकों ने भारत में ही वेद-प्रचार व देशोद्धार के लिए सारी शक्ति लगा दी, विदेश में प्रचार के लिए आर्य समाज के पास साधन ही न थे। 1893 ई. में अमरीका के कुछ लोगों ने शिकागो में एक धर्मसम्मेलन रखा। सारे विश्व के धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों को एक ही मंच पर अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया।

आर्य समाज में भी कुछ उत्साही वीरों के मन में वहां अपने प्रतिनिधि भेजने का विचार आया। इस कार्य के लिए कुछ धन- संग्रह भी हुआ, परंतु आर्य समाज अपने दो प्रतिनिधियों महामहोपाध्याय पण्डित आर्य मुनिजी व महात्मा श्री हंसराज जी को शिकागो भेजने के लिए पूरा धन न जुटा सका। स्वामी विवेकानन्द इसी सम्मेलन में गये और बड़ी प्रसिद्धि पाई।

जो कार्य आर्य समाज का संगठन न कर पाया, वे आर्य समाज के दो उत्साही सेवकों ने व्यक्तिगत रूप से कर दिखाया। जिला मुजफ्फरगढ़ (पश्चिमी पंजाब) के दो आर्य युवक डॉक्टर जेंदाराम व सिद्धूराम अपने पुरुषार्थ से शिकागो पहुंच गये। श्री जेंदाराम व सिद्धूराम दोनों ही (न्यायालय में प्रार्थना पत्र लिख ने वाले) थे। धर्म-प्रेम इतना था कि सब काम तेजकर अमरीका जाने का संकल्प करके इन्होंने एक जहाजी कम्पनी से पत्र-व्यवहार करके कोई नौकरी ले-ली। बहुत-सा आर्य साहित्य साथ ले गये। पंडित गुरुदत्तजी की अंग्रेजी पुस्तकों को रटकर और उनके आधार पर कुछ व्याख्यान बनाकर श्री जेंदारामजी ने वहां भाषण देने आरम्भ कर दिये। इन व्याख्यानों का अमरीका में प्रभाव पड़ा। शिकागो के सम्मेलन में भी जेंदाराम ने भाषण दिया। इसके पुरुषार्थ से पंडित गुरुदत्तजी का साहित्य अमरीका में लोकप्रिय हुआ। पंडितजी ने उपनिषभाष्य को एक अमरीकन ने वहां छाप दिया। भारत से भी पंडितजी के उपनिषद्भाष्य का एक शिकागो संस्करण छापकर इन्हें वितरण के लिए भेजा गया। इस संस्करण की एक दुर्लभ प्रति हमारे पास भी है।

एक अमरीकन देवी ने इनके प्रभाव से कन्या महाविद्यालय जालंधर को पर्याप्त आर्थिक सहायता भेजी। जेंदारामजी को वहां लोग वैदिक दर्शन का डॉक्टर कहने लग गये। जेंदारामजी को वहां लोग वैदिक दर्शन

...शेष पेज 4 पर

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

होली का वास्तविक स्परूप

हमें ऋषि मुनियों से प्रेरणा लेकर वर्तमान में जो इसमें विकृति उत्पन्न हो गई हैं उसको दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

होली शब्द का अर्थ है शुद्धता एवं परिपूर्णता, इसका एक और भी अर्थ है कि हमारे मन पर भूतकाल के किसी कर्म या घृणा का कोई भी रागद्वेषात्मक प्रवाह नहीं पड़ना चाहिए। हमारा मन सूर्य की भांति सदा परम शुद्ध ज्ञानवर्धक तथा निरंतर प्रगतिशील होना चाहिए, ऐसे मन को दिव्य मन कहते हैं जो परमपिता परमात्मा से सदा संयुक्त रहता है।

भक्त प्रहलाद सात्विक मन का प्रतीक है तथा हिरयकश्यप एवं उसकी बहन होलिका आसुरी प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। होलिका दहन का अर्थ है कि हमें नाकारात्मक प्रवृत्तियों (काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार) को पूरी तरह भस्मीभूत करके अग्नि की भांति शुद्ध करना चाहिए जिससे वे ऊर्ध्वगामी हो जाये। इसके परिणाम स्वरूप हमारे शुद्ध मन का परमात्मा के परम लोगों से सदा संपर्क बना रहे तथा हम ईश्वरीय प्रेरणा से दिव्य गुण, ज्ञान तथा शक्तियों को प्राप्त करके अपनी ज्ञान शक्ति, संकल्प शक्ति तथा कर्म शक्ति द्वारा इतने अच्छे कर्म करें कि किसी भी बुरी प्रवृति को सोचने की स्थिति न आए। इस प्रकार हमारे भीतर एक अभूतपूर्व अद्वितीय रूपांतरण आ जाएगा। हम विश्व के परम भक्त होकर अपना सर्वस्व समर्पित करके दिव्य कर्म करें। जिससे हमारा ही नहीं परंतु समस्त मानवता का मंगलमयी कल्याण तथा सर्वांगीण विकास होगा।

होली के उत्सव में रंग का प्रयोग अधिक होता है। अत: उस पर भी विचार करने की आवश्यकता है कि ऐसा क्यों है। हमारा भौतिक शरीर के अतिरिक्त सूक्ष्म तथा कारण शरीर भी है। हमारी आत्मा जो परमात्मा का अंश है भौतिक सूक्ष्म तथा कारण शरीर के रंगों से पूरी तरह से संबंधित है। हमारे ऋषि-मुनियों की आंतरिक ध्यानात्मक खोज के अनुसार आंतरिक रंगों की संख्या 10 अरब है तथा इनके अनन्त सम्मिश्रण है। हमारी भौतिक ज्ञानेंद्रिय आंखे अपनी सीमा के कारण केवल सात रंगों को देख सकती हैं, तथा इन सात भौतिक रंगों के सम्मिश्रण हैं। यदि हम अपने मन को संयमित करके अपनी सृष्टि को अंतर्गामी करके एकाग्र करें तो हमें अनन्त दिव्य रंगों का ज्ञान हो सकता है और हमारी जीवन शैली संपूर्णत: बदल सकती है एवं दिव्य हो सकती है। इसलिए हमें दृढ़ संकल्प एवं सतत प्रयत्न द्वारा ध्यान करना चाहिए। शुरू-शुरू में कुछ मुश्किल होगी। परंतु हमारा दृढ़ संकल्प उस पर विजय पा लेगा, बाद में ध्यान तथा एकाग्रता हमारे जीवन का स्वाभाविक अंग बन जाएंगे। आजकल वैज्ञानिक उन्नति के कारण वैज्ञानिकों ने इनफ्रारेड किरणों के लैंस आविष्कृत कर लिये हैं। जिनके द्वारा मनुष्य को आभामंडल का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो कि हमारे अंतर्द्रष्टा ऋषि अपने ध्यान द्वारा देख सकते थे और उसको शुद्ध एवं संवर्धित कर सकते थे। एक बार वैज्ञानिकों ने वृक्षों, समुद्र तथा आकाश के दृश्यमान हरे, नीले रंगों का अध्ययन किया। बड़े आश्चर्य की बात है कि वृक्ष का रंग सफेद निकला, समुद्र तथा आकाश का रंग काला निकला। खगोल विद्या के अनुसार एक लाख कुल रंगों में सफेद रंग एक है तथा काला रंग 99999 है। सफेद रंग भौतिक शक्ति का प्रतीक है तथा काला रंग अनन्त शक्ति का प्रतीक है। इसी को वैज्ञानिक डार्क एनर्जी (काली शक्ति) कहते हैं इससे स्पष्ट होता है कि हमारी धरती भौतिक असीमित शक्ति का प्रतीक है तथा समुद्र एवं आकाश दिव्य अनन्त शक्ति के प्रतीक हैं। इसलिए योगीराज श्री कृष्ण ने श्रीमद्भागवत गीता में कहा है कि मैं सागर भी हूं, आकाश भी हूं श्री कृष्ण का श्याम रंग उनकी दिव्यता का प्रतीक है। इस प्रकार अब हमें समस्त प्रकार के रंगों का बोध हो गया है। जो कि परमात्मा की दिव्य शक्ति प्रकाश के विभिन्न रूप हैं। इसी कारण दीपक जलाने तथा सूर्य को जल देने और प्रात:कालीन सूर्य के दर्शन करने की प्रथा है। ताकि हम भौतिकता से दिव्यता की ओर जाएं, अज्ञान से ज्ञान की ओर जाएं, अंधकार से प्रकाश की ओर जाएं तथा मृत्यु से अमृत्व की ओर जाएं।

अज्ञान के कारण हम परमात्मा से अलग हुए हैं तथा प्रतिपल नकारात्मक वृत्तियों के कारण तिल-तिल घुट कर मर रहे हैं, मानसिक मौत ही सबसे बड़ी मौत है, कारण कि हम भौतिक चेतना में रहते हैं, हमें परमात्मा की अनन्त चेतना में रहने का सतत अभ्यास करना चाहिए, जब तक ईश्वर की अनन्त चेतना हमारा सहज स्वभाव न बन जाए। उससे हमारा सम्पूर्ण शरीर (मानसिक भावानात्मक तथा भौतिक स्तर पर) दिव्य हो जाएगा। जो कि परमात्मा की तरह निरंतर प्रगतिशील एवं वृद्धिशील होगा। फिर से धरती पर दिव्यता के पुष्प सम्पूर्ण सुंदरता से विकसित होंगे, जिनकी कोमलता तथा सुगंध, स्वर्ग में उपस्थित देवों और परमदेवों को विमोहित करेगी। कहा जाता है कि सतयुग में देव धरती पर निवास करते थे। ऐसा अब भी सुनिश्चित रूप से सम्पूर्णता किया जा सकता है। यदि हम दृढ़ संकल्प, श्रद्धा, सम्पूर्ण एवं सतत प्रयत्न से ऐसा करना अति शीघ्र आरंभ कर दें। आश्यकता हैं केवल पहला कदम उठाने की, शेष परमपिता परमात्मा हमारा सबकुछ संभाल लेंगे तथा हमारी धरती माता पर भौतिक जीवन, परमदिव्य जीवन बन जाएगा।

होली के शुभ, पवित्र एवं मंगलमयी उत्सव पर बसंत ऋतु अपने पूरे यौवन पर होती है। जो कि परमपिता परमात्मा की ओर से संकेत है कि हमें प्ररेणा लेकर अपने मन को आंतरिक करके दृढ़निश्चय, ध्यान तथा एकाग्रता द्वारा अपनी सुप्त दिव्य शक्तियों को जागृत करना चाहिए। इसी प्रकार दिव्य शक्तियों को उद्घाटित करने पर समस्त विश्व वर्तमान असुरता पर विजय प्राप्त की जा सकती है तथा धरती पर स्वर्ग स्थापित किया जा सकता है।

आदिकाल में हमारे ऋषि मुनियों ने होली मनाने का यही लक्ष्य रखा है हमें ऋषि मुनियों से प्रेरणा लेकर वर्तमान में जो इसमें विकृति उत्पन्न हो गई हैं उसको दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

हमारी परमपिता परमात्मा से सच्ची प्रार्थना है कि वे हमें सदा अपने साथ संयुक्त रखें। ताकि हमारे भीतर अनन्त दिव्य रंग प्रकट हों जिसके परिणाम स्वरूप हमारी भौतिक, प्राणात्मक, भावात्मक, मानसिक, आध्यात्मिक तथा दिव्य शक्तियों का समंवय एवं संवर्धन हो। उसके परिणाम स्वरूप हमारे भीतर अखंड परम शक्ति, आनन्द, प्रेम, सुंदरता, कर्म-कुशलता, निर्भीकता, उत्साह, विजयभावना, कोमलता, मृदुलता, हास्य तथा अनन्त दिव्य कलाओं की उत्पति हो। हमारे दिव्य जीवन से अन्य लोगों को दिव्य जीवन जीने की प्रेरणा मिले तथा एक मूक प्रगतिशील, मंगलमयी अद्वितीय क्रांति लाई जा सके।

श्री कृष्ण गोयल,
ध्यानयोगाचार्य,
साभार- विश्व ज्योति

धर्म जाति भेद नहीं सिखाता

वर्तमान में आरक्षण से लाभ के बजाय जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है और इसका लाभ समृद्ध परिवार अधिकांश उठा रहे हैं। अतएव आरक्षण कानून समाप्त होना चाहिए और भारत वर्ष में गरीब, अतिगरीब की श्रेणी बनाकर सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिए।

सृष्टि प्रारम्भ से महाभारत युद्धकाल तक मानव समाज में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था थी और समाज में जात-पात, छुआछूत, ऊंच-नीच का प्रचलन नहीं था। महाभारत युद्ध के उपरान्त वैदिक व्यवस्था व संस्कार न्यून होने के कारण वर्ण व्यवस्था का स्थान जन्मना जाति व्यवस्था ने ले लिया और परस्पर एक जाति दूसरी जाति से घृणा द्वेष करके भयंकर नर संहार होने लगे और समाज में वैदिक संस्कारों का प्रचलन, वैदिक धर्म मान्यता तथा सत्य ईश्वर की जगह मनुष्य की शक्ल वाली बुतों की पूजा ने स्थान ले लिया। परिणास्वरूप समाज में अनेक विषमताओं ने जन्म ले लिया।

ईश्वर की कृपा से 18वीं शताब्दी में देव पुरुष महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई और आर्य समाज ने तमाम धार्मिक सामाजिक व राजनैतिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु कमर कसी। तमाम चुनौतियों को स्वीकार करके समाज को एक नयी दिशा प्रदान की और कर रहा है।

वर्णो की परिभाषा- ''ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्य: कृत:, उरु तदस्य यद्वैश्य: पदभ्यो शूद्रो अजायत। (यजुर्वेद)''

अर्थात् (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ सम्मुलास से) जो पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सबमें मुख्य उत्तम हो, वह ब्राह्मण और (बाहुर्वैबंल बाहुर्वैवीर्यम) बल वीर्य का नाम बाहू है वह जिसमें अधिक हो सो (राजन्य:) क्षत्रिय (उरु) कटि के अधोभाग और जानू उपस्थित भाग का नाम है, जो सब देशों में उरु के बल से जावे-आवे प्रवेश करे वह वैश्य और जो पग के नीच अंग के सदृश मूर्खतादि गुण वाला हो वह शूद्र है।

''शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मण्श्चैति शूद्रताम। क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्चात्त थैव च।। मनु:।।''

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के सदृश गुण वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाये। वैसे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के कुल में उत्पन्न हुए शूद्र के सदृश्य हो तो शूद्र हो जाये। वैसे ही क्षत्रिय वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाते हैं अर्थात् चारों वर्णो में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष व स्त्री हो वह-वह उसी वर्ण में गिने जावें।

धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे कि जिस-जिस के योग्य होवे। वैसे अधर्माचरण से पूर्व-पूर्व अर्थात् उत्तम-उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे वाले वर्णो को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे। जैसे पुरुष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिए। इससे सिद्ध हुआ चारों वर्णो को अपने से उत्तम व नीचे वर्णो में अपने-अपने गुण कर्म स्वभाव युक्त होने से परिवर्तन होते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश)

नोट-मनु की कर्मणा वर्ण व्यवस्था वर्तमान में पूर्ण रूप से विकृतीकरण हो गया है। आज हिन्दू समाज में विकृत जन्मा जाति-व्यवस्था प्रचलित है, जबकि धर्मशास्त्रों ने वेदानुकूल ग्रन्थों में कहीं पर भी समर्थन नहीं, नहीं किया है फिर भी मनु के नाम से जोड़कर हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) की निन्दा करने का व्यापक राजनैतिक षडयन्त्र चल रहा है।

नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाना होगा-

...शेष पेज 7 पर

आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में
महर्षि जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 192वें जन्मोत्सव पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में वैदिक विद्या मंदिर अलवर के प्रांगण में 51 कुण्डीय महायज्ञ 6 मार्च 2016 को आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री कैलाश चन्द्र विश्नोई, पुलिस अधीक्षक अलवर द्वारा ओम् ध्वज फहराकर एवं दीप प्रज्जवति कर किया गया।

-सूर्यकांत मिश्र, सह सम्पादक
आध्यात्म पथ

आर्य समाज कोटा द्वारा विश्व महिला दिवस सम्पन्न

विश्व महिला दिवस की पूर्व संध्या पर 7 मार्च 2016 को आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजस्थान प्रादेशिक कर्मचारी महासंघ की अध्यक्षा हंसा त्यागी ने कहा 'महर्षि दयानन्द ने महिलाओं को समानता का अधिकार दिलाया।' कार्यक्रम संयोजक अर्जुनदेव चढ्डा एवं आर्य समाज के प्रधान जे.एस.दुबे ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि आर्य समाज द्वारा इस कार्यक्रम में 148 महिलाओं को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों तथा पतंजलि योग समिति के पदाधिकारी सहित बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति दर्ज हुई। इस अवसर पर सामाजिक जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ, कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम, जल ही जीवन है, वृक्षारोपण, रक्तदान एवं नेत्रदान सम्बन्धी प्रदर्शनी भी लगाई गयी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राकेश चढ्डा ने किया। **-अर्जुन देव चढ्डा, संयोजक**

एक हो जावें, पर्व होली का मनावें

एक हो जावें, पर्व होली का मनावें, कुहुक रही हैं कोयल डालियां।
फ़ाग गवावें, कृपा ईश्वर की पावें, झूम रही हैं जौं की बालियां।।
एक हो जावें.....
मासों में अंतिम मास फाल्गुन विदाई का।
देने संदेशा आया, प्रेम और भलाई का।
जगें जगावें, भेद हर दिल के मिटावें, पावन बनावें हृदय प्यालियां।।
एक हो जावें.....
टेसू पलाश चन्दन, प्रेम रस में तृप्त होकर।
कह रहे हैं सीख मानव, फेंक न तू कीच गोबर।
खिलें खिलावें, महक सबको महकावें, दें न किसी को गन्दी गालियां।।
एक हो जावें.....
होवें सुखी और स्वस्थ, महके सभी का घर।
बेहिचक बे-रोक-टोक, भावना बने सुपर।
मिलें मिलावें, खावें नव अन्न खिलावें, भर भरकर बांटें गूंजा थालियां।।
एक हो जावें.....
कोई न पोशाक नव, हमको यहां पहननी होती।
शुद्ध हो संकल्प प्यारा, साफ हो बस तन पर धोती।
यज्ञ रचें रचावें, विमल अमृत को पावें, आनन्द मनावें दे दे तालियां।।
एक हो जावें.....
फ़ाग गवावें, कृपा ईश्वर की पावें, झूम रही हैं जो जौ की बालियां।।
तर्ज : गोरी हैं कलाईयां.....

-विमलेश बंसल 'आर्या' नई दिल्ली

आर्य समाज, बाजार सीताराम का 96वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, बाजार सीताराम अपना 96वां वार्षिकोत्सव 18 से 24 अप्रैल 2016 के मध्य आर्य समाज मंदिर में आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम का शुभारम्भ सामवेदीय वृहद यज्ञ से होगा, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य राजू जी वैज्ञानिक होंगे। आचार्य प्रदीप कुमार शास्त्री (फरीदाबाद) भजन प्रस्तुत करेंगे।

-बाबूराम आर्य, मंत्री, दूर. 23252104

आर्य समाज रामनगर, रुड़की का 39वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मंदिर रामनगर, रुड़की के 39वें वार्षिकोत्सव पर 18 मार्च से 21 मार्च 2016 के मध्य वेद कथा की अमृत वर्षा होगी। कार्यक्रम आर्य समाज मंदिर परिसर में ही आयोजित किया जाएगा। **-रामेश्वर प्रसाद सैनी, 9411153759**

महर्षि दयानन्द जयंती पर भव्य शोभायात्रा

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जी के 192वें जन्मदिवस पर जिला सभा प्रधान श्री अजीत कुमार आर्य के नेतृत्व में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। वाराणसी के महापौर श्री राम गोपाल मोहले ने ओम् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का शुभारम्भ किया। **-प्रमोद आर्य मंत्री**

आर्य समाज नया बांस का 96वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नयाबांस का 96वां वार्षिकोत्सव 28 मार्च से 3 अप्रैल 2016 के मध्य आर्य समाज प्रांगण में अथर्ववेद खण्ड पारायण यज्ञ के साथ आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य शिवनारायण शास्त्री होंगे। समारोह में आर्य वाल सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा विशिष्टि अतिथि श्रीमती रश्मि वर्मा एवं कार्यक्रम संचालिका श्रीमती बीना आर्या जी होंगी। **-उत्तम कुमार आर्य, प्रधान**

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ के तत्वावधान में
ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर हरियाणा के तत्वावधान में नि:शुल्क ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ 28 मार्च से 3 अप्रैल 2016 के मध्य आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी देवव्रत जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीरदल होंगे एवं प्रमुख वक्ता आचार्य चन्द्र देव जी होंगे। शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च एवं ऋतु अनुसार बिस्तर आदि साथ लाएं। भोजन आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क होगी। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

संयोजक, ईशमुनि वानप्रस्थी, 9812640989

अपने बच्चों को उनके जन्मदिन पर दें
ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर चित्रकथाएं

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

पृष्ठ 2 का शेष

वे आग्नेय ...

का डॉक्टर कहने लग गये। इस पर जेंदारामजी ने वहां बिजली चिकित्सा सीख ली और डॉक्टर बन गये। भूमंडल प्रचारक मेहता जैमिनीजी ने लिखा है वे पंजाब के प्रथम बिजली के डॉक्टर थे। उन्होंने वहां एक मासिक पत्र भी निकाला था। उसका नाम क्या था? यह पता नहीं। सिद्धूराम तो पहले स्वदेश लौट आये, परंतु डॉक्टर जेंदारामजी ने ढाई वर्ष तक अमरीका में धर्म प्रचार किया। स्वदेश लौटकर वे मुलतान में रहने लगे। लासएंजल्स में डॉक्टर जेंदारामजी ने अपना मुख्य कार्यालय बनाकर वैदिक धर्म की धूम मचा दी। वे फ्रांस भी जाना चाहते थे, परंतु उनकी यह इच्छए पूरी न हो सकी। यदि आर्य समाज के दो-चार दीवाने उनकी पीठ ठोक देते, कुछ सहयोग करते तो संभव है, वे वहां भी कुछ कर दिखाते।

कितने आश्चर्य की बात है कि जो युवक संस्कृत के विद्वान् नहीं थे, अंग्रेजी की भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये थे, वे अपनी लग्न व उत्साह से अमरीका में स्वदेश के गौरव का कारण बने और सफल मिशनरी सिद्ध हुए। विद्वान् तो विदेश-प्रचार के लिए गये थे, परन्तु आर्य समाजी के इतिहास में डॉक्टर जेंदाराम प्रथम आर्यपुरुष था जो केवल धर्म -प्रचार के लिए विदेश गया था। निश्चय ही ये दोनों बन्धु आग्नेय पुरुष थे।

साभार-तड़पाती जिनकी कहानी

25 मार्च बलिदान दिवस पर विशेष

गणेश शंकर विद्यार्थी जैसा बलिदानी विरले ही मिलेगा

गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म तीर्थ राज प्रयाग (इलाहाबाद) मे 26 अक्टूबर 1890 ईसवी को अपनी ननिहाल में हुआ था। आपके पिता श्री जयनारायण एक सुशिक्षित, उत्तम विचारों से ओत-प्रोत राष्ट्र भक्त एवं परोपकारी थे। कुछ वर्षो तक गणेश जी अपने नाना-नानी एवं माता गोमती देवी के साथ ननिहाल में ही रहे। आपके नाना श्री सूरज प्रसाद उन दिनों सहारनपुर में सहायक जेलर थे। गणेश शंकर डबल रोटी खाने के बडे शौकीन थे। उन दिनों जेल के कैदियों से ही डबल रोटिया बनवाई जाती थीं जो बाजार में बिकती थी पर गणेश जो डबल रोटी खाते थे वह जेल से सीधे उनके घर पहुंचती थी। जब वह उसे देखते थे तो गर्व महसूस करते थे। उनकी माँ और नाना-नानी को क्या पता था कि इस बालक को जीवन में सच में ही जेल की ही रोटियां खानी पड़ेंगी।

बालक गणेश ने पाचवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते उर्दू का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था पर पिता हिन्दी प्रेमी थे अत: वह गणेश को उर्दू की अपेक्षा हिन्दी सिखाना चाहते थे। गणेश ने बड़ी सरलता से हिन्दी को सीख लिया। स्वयं गणेश ने लिखा था कि 'मुझे हिन्दी बड़ी सरल लगती थी। हिन्दी पढ़ने में मेरा मन भी अधिक लगता था। मैंने उन्हीं दिनों हिन्दी के अखबारों को पढ़कर बहुत सी सामाजिक और राजनीति बातों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।'

समय के साथ गणेश ने 1907 में द्वितीय श्रेणी से हाई स्कूल उत्तीर्ण किया और फिर एफ.ए की पढाई शारीरिक अक्षमता के कारण बीच में ही छोड़ दी। गणेश शंकर जी को बेकार बैठे रहना पसंद नहीं था अत: उन्होंने पी. पी. एन स्कूल कानपुर में अध्यापन का कार्य करना शुरू किया वेतन था बीस रुपये मासिक।

गणेश ने किसी के सामने झुकना और रोटी के लिये मानवता बेचना नहीं सीखा था। वह हमेशा गंभीर और निर्भीक रहते थे। उन्हीं दिनों पंडित सुन्दर लाल जी का एक अखबार 'करमवीर' निकलता था। युवा गणेश उसे पढ़ते थे जिसमे गौरी सरकार के विरुद्ध तीखी आलोचनायें छपा करती थीं। एक दिन स्कूल की प्रधान ने गणेश को 'करमवीर' पढ़ते हुए देख लिया और चिल्लायी और बोली इस अखबार को जला दो पर गणेश भला क्यों जलाने लगे 'करमवीर' तो उनका प्रिय अखबार था और सुन्दर लाल उनके मन पसंद गुरु थे। तपाक से उत्तर दिया - मै अखबार तो नहीं जला सकता? नौकरी से त्याग पात्र अवश्य दे सकता हूं और उन्होंने तत्काल नौकरी छोड़ दी।

सन् 1909 तक गणेश अच्छे लेखक बन चुके थे। उनके लेख करमवीर, सर्वराज और अम्युध आदि समाचारों-पत्रों में छपा करते थे, जो उस समय बहुत प्रसिद्ध थे। अपनी लेखनी के बल पर गणेश को अपने समय की श्रेष्ठ मासिक पत्रिका 'सरस्वती' जिसके प्रधान संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी थे उसमें कार्य करने का गौरव प्राप्त हुआ। जिन दिनों गणेश 'सरस्वती' में कार्य कर रहे थे, उन्हीं दिनों 'अम्युध' में सहायक सम्पादक की जगह खाली हुई इसके संस्थापक एवं सम्पादक श्री मदन मोहन मालवीय जी थे। सौभाग्य वश ये जगह गणेश को मिल गई। इस पत्रिका के माध्यम से गणेश का नाम पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रख्यात हुआ। आपने कुछ समय बाद स्वयम् का अपना साप्ताहिक पत्र निकला जिसकी आर्थिक सहायता सामाजिक कार्यकर्ता श्री काशी प्रकाश ने की और पत्र का नाम रखा 'प्रताप'। यही 'प्रताप' जिसने भारतीय जन-मानस में राष्ट्र की आजादी हेतु कृत संकल्पित रह कर लडने, गौरी सरकार के काले कारनामे को जन-मानस में राष्ट्र की आजादी हेतु कृत संकल्प रह कर लड़ने को जनता के समक्ष प्रकट करने, अमीरों और जमींदारों के अत्याचारों का पर्दा फाश करने, थानेदारों द्वारा अनपढ़ एवं भोली-भाली जनता पर किये जा रहे जुल्मों का भांडा फोड़ करने ,गरीबों किसानों और मजदूरों के घर में पहुंच कर उनके भीतर स्वतंत्रता के भाग जगाने में अमूल्य ,अतुलनीय व वन्दनीय सहयोग दिया। जिसके कारण ये लोग उनके शत्रु बन गए। 'प्रताप' पर मुकदमे दायर किये जाने लगे और कई बार गणेश को जेलों की हवा भी खानी पढ़ी।

13 अप्रैल 1919 के जलियांवाला बाग हत्या काण्ड ने भारत को अचम्भित कर दिया तथा भारतीय जन मानस में अंग्रेजी सरकार का आतंक छा गया अनेक समाचार पत्रों ने इस हृदय विदारक घटना को डरते डरते छापा परन्तु 'प्रताप' ने इस निकृष्ट कार्य को बड़ी निर्भीकता से छापा जिससे सरकार 'प्रताप' को मधुमखियों का छत्ता समझने लगी। अब 'प्रताप' के माध्यम से जनता के बीच 'प्रताप' और 'गणेश शंकर' दोनों एक दूसरे के पूरक हो गये थे। असहयोग अन्दोंलन में 'प्रताप' की सेवाएं सदा स्मरण की जायेंगी। इसी दौरान गणेश की भेट जवाहर लाल नेहरु, महात्मा गाँधी और भगत सिंह से भी हुई और भगत सिंह ने तो गणेश शंकर के साथ 'प्रताप' में लम्बे समय तक कार्य भी किया।

सन् 1913 में भगत सिंह और उनके साथियों को असेम्बली बम विस्फोट के मामले में फांसी की सजा सुनाई गई थी और 23 मार्च को उनको फांसी पर लटका दिया गया। 24 मार्च को सुबह जब ये समाचार सारे देश में फैला तो शोक सागर उमड़ पड़ा। कई जगह दंगे हुए और इन दंगों ने साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर लिया। हिन्दू और मुस्लिम मानव से दानव में परिवर्तित हो गये थे। गणेश शंकर से नहीं रहा गया और राष्ट्र की एकता को भस्म होते हुए देख वह दंगे की आग बुझाने के लिये घर से निकल पड़े। उस दिन कितने ही हिन्दू और मुलिमों को मौत से बचाने में उन्हें सफलता हासिल हुई।

25 मार्च को कुछ मुसलमान बल्लम सीधा करके उनकी ओर झपटे साथ के मुसलमान स्वयम् सेवक गरज उठे 'खबरदार! ये वे ही गणेश शंकर है जिन्होने हजारों मुसलमानों की जान बचाई है इनकी जान बचाना तो हज में जाने के बराबर है' गणेश शंकर को देखते ही वह जंगली भेडियो की तरह उन पर टूट पड़े और गणेश को धरती की गोद में सुला दिया। धरती रक्त रंजित हो गई। भारत के इतिहास में साम्प्रदियकता को मिटाने के लिये हिन्दू-मुसलमानों में प्रेम और प्यार बनाये रखने के लिये आपको इससे बड़े बलिदान का उदाहरण और कहीं नहीं मिलेगा किन्तु आज कांग्रेस का कोई नेता विद्यार्थी का नाम भी लेना पसंद नहीं करता।

पृष्ठ 1 का शेष

सार्वदेशिक सभा के ...

प्रतीत नहीं हो रही हैं। अत: सिंहस्थ मेला वैदिक धर्मप्रचार समिति इस महान अवसर पर ईश्वरीय ज्ञान, सत्य सनातन वैदिक धर्म का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयत्न करेगी। अन्धविश्वास और धर्म के नाम पर प्रचलित अवैदिक विचारधारा का शमन कर धर्म के सत्य स्वरूप का संदेश प्रसारित करेगी।

उज्जैन के शिप्रा तट पर कुंभ सिहस्थ मेले के अवसर पर वेद प्रचार एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विराट् एवं भव्य आयोजन किया जा रहा है। सिहंस्थ मेला विश्व के विशालतम आयोजनों में से एक है-जहां लाखों श्रद्धालु ज्ञानार्जन, आनन्दोपलब्धि हेतु भ्रमणार्थ एकत्रित होते हैं। ऐसे अवसर पर वैदिक धर्म के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार, अंधविश्वास एवं पाखण्ड खण्डनार्थ एक विशाल शिविर सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति उज्जैन द्वारा आयोजित किया जा रहा है। मेले की पूर्व तैयारी एवं रूप रेखा के विषय में उज्जैन आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य एवं उप मंत्री श्री विनय आर्य ने एक बैठक की जिसमें मेले में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की रूप रेखा तैयार की गयी।

-संवाददाता

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

वैदिक आर्य संन्यासियों और विद्वानों से प्रेरणा मिली और अंध विश्वास से छुटकारा मिला

बात सन् 1946 की है जब मेरी किशोर वय थी। श्रीमद्भागवत् कथा सुनने अपने परिवार के साथ अपनी रिश्तेदारी के गांव में गया था। गर्मी के दिन थे। कथा में उद्धव एवं गोपियों के बारे में कृष्ण वियोग का प्रसंग चल रहा था। जब इस प्रसंग का वर्णन चल रहा था तब कथा वाचक एवं श्रोता भक्तिरस में तल्लीन होकर अश्रुपात कर रहे थे। कथा के बाद सभी ने पण्डित जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कथा के बाद कथा वाचक पण्डितजी मंदिर की छत पर विश्राम हेतु पहुंचे तो मैंने स्वयं पंण्डितजी की अश्लील हरकतें देखीं जिसका वर्णन करना इस लेख में मैं उचित नहीं समझता। कथा वाचक पंण्डितजी की हरकतों एवं अश्लील कृत्यों को मैंने जब अपने से बड़ों को बताया तो सभी लोगों ने मुझे भला-बुरा कहा तथा मेरी जम कर पिटाई कर दी, काफी मार पड़ी। मैं बचपन में नटखट एवं कुछ उद्दंड प्रवृत्ति का था। कथा वाचक पंण्डित जी में लोगों की अटूट अंध श्रद्धा थी तथा मेरी बात किसी ने नहीं सुनी। परन्तु इस घटना ने मुझे विद्रोही एवं बगावत करने को मजबूर कर दिया। जब कभी कोई कथा भागवत आदि की बात करता तो मुझे बड़ी घृणा होती। कालांतर में मैं भारतीय सेना में भरती हुआ और बाद में छाताधारी सैनिक के रूप में वालिंटियर होकर यूनिट में पोस्ट हुआ। जब मैं एनसीओ बना तब मेरे साथ हरियाणा, महेन्द्रगढ़ के नायक छत्तूसिंहजी आर्य का साथ मिला जो कट्टर आर्य समाजी थे। वे नित्य प्रात:साढ़े तीन बजे जागते और नित्य गायत्रीमंत्र का जाप एवं संध्या करते। उनके आचार-विचार और क्रिया कलाप सात्विक वृत्ति से मैं प्रभावित हुआ परन्तु उनके जप-तप संध्या आदि को ढोंग एवं पाखंड मानता था। कुछ दिन बाद उनके साथ आगरा के नामनेर एवं नाई की मण्डी आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में जाने का सुअवसर मिला। वहां आर्य क्रांतिकारी संन्यासी नारायण स्वामी, कुंवर आर्य सुखलाल मुसाफिर पंण्डित अमर सिंह शास्त्रार्थ महारथी आदि विद्वानों, संन्यासियों के प्रवचन एवं भजन से मेरी सारी शंकाओं का समाधान हुआ। विदुषी महिला बहन सावित्री देवी-बरेली के प्रवचन भी कभी-कभी सुनने को मिले तथा पंण्डित श्रीराम शर्मा कासगंज का खंडन मण्डन का साहित्य भी पढ़ने को मिला। वैदिक सत्संग आदि में रूचि बढ़ी। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश जहां-जहां ट्रांस्फर पोस्टिंग मिली वहां आर्य समाज में सत्संग का सुअवसर मिलता रहा तथा पाखंड एवं अंधविश्वास से छुटकारा मिला। अब मैं सन् 1989 में सेना से सेवा निवृत्ति हो चुका हूं तथा आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का अनुयायी बन चुका हूं। आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु कुछ करना चाहता हूं।

-सूबेदार मेजर ओम प्रकाश शर्मा, फतेहाबाद, आगरा

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इस स्तम्भ निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Four Gate-Keepers of the Human Body

In the four quarters of the human body are posted four quarter-guards. The Mluth is the eastern; the anus the western; the hole in the bny joints of the skull, the nortern and the procreating organ, the southern gate-keeper. The verse says, 'Man should offer oblations with devotion to the remarkable quarter-guards so that they diligently take care of their functions.'

The mouth, the eastern guard has the gate-pass to allow agreeable food and drink to enter the body. The intake has to be regulated systematically."O men, may your food be beneficial to the body and the mind. Earn your bread by honest means. May that be digested by regular exercise." The western gate ghould function with efficiency. The eastern guard, also, has control over speech which shall have truth and only fruth.

The hole in the skull is the northern door and the procreating organ, the southern door. The Soul enters into the body of the babe in the womb through tyhe northern door. The Yogis allow their soul to exit through the same. Both the doors are interconnected. Man should worship the northern qard with good thoughts and the southern guard by observing the discipline of sex.

आशानामाशापालेभ्यश्चतुभर्यो अमृतेभ्य:।

इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम्।। (Av.I.31.1)

Asanamasapalebhyascaturbhyo amrtebhyah.

idam bhutasyadhyaksebho vighema havisa vayama..

Asent

'Let there be upward going of you, not downward. I give you strength for living long.. Do ascend this pleasing chariot of immortality. Till your old age, spread the qcquired knowledge to enlighten others', says the verse.

O man, shine with a graceful form. blaze with splendour. You have been granted a faultless chart, yourwondrous body. To move upwards is your birth right and hence solemn duty. You are the immortal child of the Lord. Grow and attain the highest shere of liberation. Be a champion in the battle of life. You are the upholder of truth on the earth. Invigorate your limbs, enlighten the mind and exhilarte yourself. you have been endowed with strength and spirit to transform your mental sheath into the intellectual and the intellectual sheath into the spiritual. Realise the glory and grandeur of your possession which other beings have been denied. May your chariot move smooth and fast. Satiate your heart with noble throughs. You are the sovereign ofearthly creatures. Mobilize your faculties to maintain righterousness on the earth.

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवांतु ते दक्षतातिं कृणोमि।

आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि।। (Av. VIII.1.6)

Udyanam te purusa navayanam jivatum te daksatatim krnomi.

a hi rohemamamrtam sukham rathamatha jirvirvidathama vadasi..

Keep away form unsatiated longing.

"Causing intense thirst and burning, O the ever thirst one, your never-ending wish is a poisonous drink; may you become discarded as a barren cow by a strong bull, "says the verse.

Desire that is ever unsatiated is abominable. Like a parasite creeper in a tree, it saps out the sweetness of mind. The verse recommends to throw away the highly emotional desire like a strong bull putting aside a barren cow. A person falling prey to insatiable desire ever remains the poorest of the poor. Amidst the ocean of prosperity, his thirst is never quenched. He is deprived of the wealth of contentment. Desire for acquiring a hundred multiplies to a thousand, a thousand to a hundred thousand and so on. As water does not stand on a ridge, finer values of life do not find place in a tormented mind. Never, indeed, a desire is pacified by enjoyment, it increases all the more by enjoyment just as fire y repated oblations. it is said that thirst for pleasure does not decay, but we ourselves are decayed.

तृष्टासि तृष्टिका विषा विषातक्यऽसि।

परिवृक्ता यथासस्यृषभस्य वशेव।। (Av.VII.113.2)

Trstasi trsika visa visatakya si

parivrkta yathasasyrssabhasya vaseva..

To Be Continue...

संस्कृतम्

स्त्री शिक्षाया आवश्यकता

शिक्षा मनुष्ये स्वकर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानमादधाति। शिक्षयैव जना: शुभं कर्म कुर्वन्ति, अभुभं च परित्यजन्ति। शिक्षिता एव जना देशसेवां राष्ट्ररक्षां राष्ट्रसंचालनं पठनं पाठनं विज्ञानोन्नति च कुर्वन्ति। यथा पुरुषेभ्य: शिक्षा श्रेयस्करी वर्तते, तथैव स्त्रीभ्योऽपि शिक्षाया महती आवश्यकता वर्तते।

स्त्रीणां कृते शिक्षाया महती आवश्यकता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यत् ता एव समये प्राप्ते मातरो भवन्ति। यथा मातरो भवन्ति, तथैव सन्ततिर्भवति। यदि मातरोऽशिक्षिता: विद्याशून्या: कर्तव्यज्ञानहीनाश्च सन्ति, तर्हि पुत्रा: पुत्र्यश्च तथैवाविद्याग्रस्ता: कुशलतारहिताश्च भविष्यन्ति। यदि नार्य: शिक्षिता: सन्ति, तर्हि ता: स्वपुत्राणां पालनं रक्षणं शिक्षणादिकं च सम्यक्तया करिष्यन्ति, एवं तासां सन्तति: विद्यायुक्ता हृष्टा पुष्टा सद्गुणोपेता च भविष्यति। अतएव महानिर्वाणतन्त्रेऽप्युक्तमस्ति-

'कन्याऽप्येवं लालनीया, शिक्षणीया प्रायत्नत:'।।1।।

विवाहे संजाते कन्या: गृहस्थाश्रमं प्रविशन्ति। यदि पुरुषो विद्वान् स्त्री च विद्याशून्या भवति तर्हि तयो: दाम्पत्यजीवनं सुखकरं न भवति। विद्याया अभावात् स्त्री स्वकीयं कर्तव्यं न जानाति, अतएव बहवो रोगा व्याधयश्च तत्र स्थानं कुर्वन्ति। अत: स्त्रीणामपि शिक्षा पुत्राणां शिक्षावदेव आवश्यकी वर्तते। स्त्रियो मातृशक्ते: प्रतीकभूता: सन्ति, अतस्तासां सदा सम्मान: करणीय:। यस्मिन् देशे समाजे च स्त्रीणामादरो च स्त्रीणामादरो भवति, स देश: समाजश्चोन्नति प्राप्नुत:। उक्तं च मनुना-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:'।।2।।

बालिकानां शिक्षा बालकै: सहैव स्यात्, पृथग् वा, इत्येष विषय: साम्प्रतं यावद् विवादास्पदमेवास्ति। स्त्रीशिक्षाया भारते प्रथमं बहुविरोधोऽभवत्। साम्प्रतं स समाप्तप्राय एव। स्त्रीशिक्षाया: काश्चन हानयोऽपि दृश्यन्ते, तासां परिमार्जनं कर्तव्यम्। शिक्षिता: स्त्रिय: प्रायोऽधिकं सुकुमार्यो भवन्ति। तासां चेतो गृहकर्मसम्पादने न तथा संलग्नं भवति यथा विलासे आमोदे प्रमोदे च रमते। एतास्त्रुटय: परिमार्जनीया:। स्त्रीणां सा शिक्षाऽद्यत्वे विशेषतो लाभप्रदा विद्यते, यथा ता: गृहकर्मप्रवीणा: कुलाग्डना: सत्य: पतिव्रता: साध्व्यो विदुष्यो मातरश्च भवन्ति। यथा ता देशस्य समाजस्य च कल्याणसम्पादने प्रवृत्ता भवन्ति, सैव शिक्षा हितकरी वर्तते।

देशस्य समाजस्य चोन्नत्यै श्रीवृद्धये च स्त्रीशिक्षाऽत्यावश्यकी वर्तते।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

बोध कथा

84 लाख योनियों का चक्र

एक था बेचारा सूरदास। ऐसे दुर्ग में फंस गया, जिसमें भयानक अग्नि जल रही थी। कितने ही भयानक पशु वहां चिल्ला रहे थे। एक ओर यह झुलसा देनेवाली गर्मी, दूसरी ओर इन भयानक पशुओं की गर्जना और दहाड़। बेचारे सूरदास ने प्रयत्न किया कि दुर्ग से बाहर निकले, परन्तु जिधर भी वह जाता, उधर का द्वार उसे बन्द मिलता। 84 लाख द्वार थे, परन्तु बेचारे सूरदास को एकभी द्वार खुला नहीं मिला। भय और कष्ट से घबरा गया और चिल्लाकर बोला-''अरे, कोई मुझ पर दया करके बताओ कि इस दुर्ग में कोई द्वार खुला भी है या नहीं?''

एक और व्यक्ति ने उसकी अवस्था देखी। उसके पास जाकर कहा-'सूरदास! 84 लाख द्वार है यहां, केवल एक खुला रहता है।'

सूरदास ने विनयपूर्वक पूछा-'कौन-सा द्वार?'

उस व्यक्ति ने कहा- 'वह सामनेवाला दीवार में है, परन्तु बहुत दूर। तुझे दिखाई देता नहीं। इधर से उस द्वार तक पहुंच न पायेगा। मेरे साथ आ। मैं तेरा हाथ इस दीवार पर रख देता हूं। इसको छूता हुआ चला जा। जहां खुला द्वार आयेगा, वहां से बाहर चले जाना।'

उस व्यक्ति ने सूरदास का हाथ रख दिया दीवार पर। सूरदास चलने लगा। परन्तु उसे खुजली की बीमारी थी। बार-बार खुजली उठती। वह खुजलाता और चलता जाता। जब वह खुले द्वार के पास पहुंचा तो पुन: खुजली जाग उठी। दीवार से हाथ उठाकर वह खुजाता हुआ बढ़ गया। फिर 84 लाख द्वारों के चक्र में पड़ गया।

आपको इस बेचारे सूरदास पर दया आती है। मन-ही-मन आप सोचते हैं। कितना अभागा है वह। परन्तु सोचो मेरे भाई। क्या आप स्वयं पर दया नहीं कर सकते? अरे, हम भी तो उस सूरदास की भांति है। 84 लाख योनियों के चक्र में पड़े हैं। 84 लाख बन्द द्वार हैं यहां। दु:खों-कष्टों की अग्नि जल रही है यहां। पाप-ताप के पशु दहाड़ रहे हैं। केवल एक द्वार खुला है-यह मानव योनि। किसी ज्ञानी ने कृपा करके कहा-'इस द्वार से बाहर निकल जाओ।' परन्तु हाये रे अभागे! इस खुले द्वार के समीप पहुंचकर तेरे अन्दर तृष्णा, विषय-वासना की खुजली जाग उठती है। दीवार से हाथ उठाकर तू खुजलाने लगता है। खुजलाता हुआ आगे बढ़ जाता है। और फिर वही 84 लाख का चक्कर।

उस बेचारे अन्धे पर दया करते हो, अपने-आप पर नहीं कर सकते? कब तक भटकते रहोगे इस दुर्ग में, जहां दु:ख ही दु:ख है-कष्ट ही कष्ट? यह मानव शरीर तुम्हारे समक्ष है। काम, क्रोध, लोभ,मोह, अहंकार की खुजली में फंस गये तो द्वार फिर निकल जायेगा और यह निकल गया तो 'महती विनष्टि' बहुत बड़ा विनाश होगा।

साभार: बोध कथाएं

साभार : बोध कथाएं

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ 3 का शेष

धर्म जाति भेद ...

प्रत्येक आर्य व आर्य समाजी विचार वाले व अन्य सुधारवादी सज्जनों को अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाना चाहिये। आर्य समाजी स्वयं जातिवाद के कटघरे में खड़ा है। हम दूसरों को क्या सन्देश दे रहे हैं। महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर चल कर ही आर्य समाज उन्नति कर सकता है।

शास्त्रानुकूल शूद्र की परिभाषा- परिवारों में जो पढ़ने से भी न पढ़े सुनने से भी सुने आगे बढ़ने का प्रयत्न न करे, उसे शूद्र की संज्ञा दी जाती थी किन्तु भेदभाव नहीं था वर्तमान में भिक्षा युग चल रहा है, सभी परिवारों में युवक-युवती शिक्षित हैं अत: शूद्र अब अर्थात् (अनपढ़) अंगुलियों में गिनने लायक रह गये हैं। फिर शूद्र कहां हैं।

अज्ञान एवं अहंकार के कारण व्यवसायनुकूल नीच जाति व्यवस्था बनाई गई- जो-जो जिस व्यवस्था के कारण अर्थात् जैसे-लोहार, टम्टा मिस्त्री, दर्जी (औजी) जो ढ़ोल बजाते हैं व बुनकर आदि को अछूत व नीच जाति का समझा जाता है,परन्तु अब स्वर्ण जातियों ने उक्त व्यवसायों को अपना लिया है तो फिर अब जाति व्यवस्था में ऊंच-नीच छुआछूत क्यों है। उसे खत्म करना पड़ेगा, व्यवसायों में समानता आ गई है।

अवैदिक राजनीति के कारण जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है- भारत की राजनीति पूर्ण रूप से जातियों के नाम से वोट बैंक बना रही है कि यह एक जातिवाद कायम रहने का नासूर बन गया है। कालान्तर में यह कृत्य भयंकर विस्फोट करेगा। सारा भारत जातिवाद वर्गवाद में बंट गया है इसे समाप्त करना पड़ेगा। हमें स्मरण रखना चाहिए यह विज्ञान का युग है अर्थात् विज्ञान चरम सीमा तक पहुंच रहा है। फिर मानव जातियों में ऊंच-नीच छुआछूत क्यों हो रहा है। जब ईश्वर अपने सम्पूर्ण तत्वों को बिना भेदभाव के सब प्राणियों को देते हैं तो मनुष्य क्यों भेदभाव करता है क्या मनुष्य ईश्वर से भी बड़ा है।

भारत सरकार को आरक्षण की भीख देना समाप्त करनी चाहिए- भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त शोषित व अत्यन्त गरीब नागरिकों के लिए उस वक्त आरक्षण तो ठीक था, किन्तु आरक्षण को निरन्तर बनाये रखना ठीक नहीं है। अब वर्तमान में आरक्षण से लाभ के बजाय जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है और इसका लाभ समृद्ध परिवार अधिकांश उठा रहे हैं। अतएव आरक्षण कानून समाप्त होना चाहिए और भारत वर्ष में गरीब, अतिगरीब की श्रेणी बनाकर सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिए।

आर्य समाज तथा अन्य सुधारवादी संगठनों से निवेदन- यह सर्वमान्य है कि आर्य समाज सुधारवादी संगठन है और जो अन्य संगठन समाज सुधार में सक्रिय हैं वह भी साधुवाद के पात्र हैं। समय आ गया है कि सभी मिलकर इस जातिवाद को भारत वर्ष में जड़ से समाप्त करने में आन्दोलित होवें। इस कतिथ जातिवाद से भारत ने बहुत हानि उठाई है और अब भी जातिवाद के कारण मानव जगत में शीत क्रांति चल रही है। यदि हमने जातिवाद को समाप्त कर दिया तो हम ईश्वरीय सिद्धान्तों के अति समीप पहुच जायेंगे अर्थात् ईश्वर की व्यवस्था में चलकर सुख व शान्ति पायेंगे। आर्य समाज संगठन को अब सुधारवादी कार्यो में आन्दोलित होना ही पड़ेगा।

जन्म के आधार पर जाति मानने से हानि ही हानि- जब से जाति का आधार जन्म से माना जाने लगा और शूद्र कुल या कथित छोटी जाति में जन्म लेने वाला छोटी जाति का माना जाने लगा, उसी समय से हमारा पतन होना प्रारम्भ हुआ। इसका दण्ड हमने कम नहीं भोगा है और भोग रहे हैं। सदियों की दासता सहनी पड़ी। विश्व गुरु भारत को किस-किस का गुलाम नहीं बनना पड़ा। भारतवासियों को एक होते हुए भी अनेकता में बंटना पड़ा ज्ञान-विज्ञान के शिखर पर पहुंची यह मानव जाति अज्ञान के अन्धकार में भटकने को विवश हो रही है। **-पं. उम्मेदसिंह विशारद, देहरादून**

आर्य समाज मंगोलपुरी ओ ब्लॉक का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मंगोलपुरी ओ ब्लॉक का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 से 27 मार्च 2016 के मध्य मनाया जा रहा है। समारोह में वेद कथा आचार्य हरि प्रसाद जी द्वारा व भजन पं. ओम प्रकाश फ्रंटियर (रेडियो सिंगर) द्वारा प्रस्तुत किये जाएंगे। कार्यक्रम वेद प्रचर मंडल उ.प. के प्रधान श्री सरेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा एवं मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं राखी बिड़ला विधायिका होंगी। **-हरिओम आर्य, मंत्री**

गोरव

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द जी ने किया-लगातार नव घण्टे संस्कृत में शास्त्रार्थ

चिन्तनीय बातें :

1. 'सत्यमेव जयते' अपने आप नहीं होता है, प्रत्युत सत्य को भी पुरुषार्थ पूर्वक जिताना पड़ता है।

2. सुयोग्य - सुपात्र व्यक्ति से शास्त्र-चर्चा करने में समय लगाना फलदायक रहता है- इसका उदाहरण है यह शास्त्रार्थ।

3. अद्वैतवाद -नवीन वेदान्त के अन्धकार को दूर करने के लिए महर्षि ने दो ग्रन्थ लिखे - 1. 'अद्वैत मत खण्डन' और 2. 'वेदान्ति ध्वान्त निवारण'। प्रथम ग्रन्थ अप्राप्य है। 'वेदान्ति ध्वान्त निवारण' के अन्त में महर्षि ने अद्वैत मत को मानने से होने वाली हानियों का वर्णन किया है।

4. महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में 7-8-9 और 11 इन चार समुल्लासों में नवीन वेदान्त का खण्डन किया है। सत्यार्थ प्रकाश में इतना विस्तार से खण्डन तो मूर्ति पूजा का भी नहीं किया गया है। नवीन वेदान्तियों की गणना उन्होंने नास्तिकों की कोटि में की है।

5. अपने आरम्भिक काल में दयानन्द जी भी कुछ काल पर्यन्त अद्वैतवादी रहे थे। परन्तु कालान्तर में पंचदशी नामक वेदान्ती पुस्तक को पढ़कर वे सावधान हो गए और तुरन्त ही उन्होंने पंचदशी की कथा करना बन्द कर दिया। आगे चलकर वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन व मनन से उन्होंने ज्ञान आलोक प्राप्त किया और ईश्वर-जीव-प्रकृति रूपी तीन अनादि मूल सत्ताओं को मान्य कर वैदिक त्रैतवाद के प्रवर्त्तक बने।

6. निम्नलिखित शास्त्रार्थ को पढ़ने से हम इस बात का अनुमान कर सकते हैं कि अविद्या-अन्धकार को दूर करने के लिए महर्षि ने कितना पुरुषार्थ किया होगा।

शास्त्रार्थ का विवरण : 1879 ई. (सम्वत् 1936) में आयोजित हरिद्वार का कुम्भ मेला चल रहा है। आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने यहां अपना डेरा लगाया है। उनका वेद धर्म का मण्डन और पाखण्डमत का खण्डन कार्यक्रम सर्वात्मना चल रहा है। एक दिन प्रात:काल लगभग 6.30 बजे अकस्मात् एक वृद्ध संन्यासी महात्मा महर्षि के डेरे की ओर आते हुए दिखाई देते हैं। उनकी आयु 80 वर्ष से कम नहीं है, परन्तु शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ है। उनके चेहरे पर ओज और तेज है। क़फ़नी पहनी है और शिर मुंडाया हुआ है। नाम है- आनन्दवन। उनके साथ उन्हीं की आकृति के उनके 10-12 शिष्य भी हैं। महर्षि ने उन्हें दूर से ही अपने डेरे की तरफ आते हुए देख लिया था। अत: डेरे के द्वार पर आकर महर्षि ने उनका स्वागत किया और भीतर ले जाकर उन्हें सम्मान पूर्वक गद्दी पर बिठलाया। आनन्दवन जी नवीन वेदान्ती हैं, शांकर मतानुयायी हैं, एक मात्र ब्रह्म को ही सत्य मानते हैं। उनकी दृष्टि में जीव और ब्रह्म एक ही हैं, अभिन्न हैं और यह जगत् मिथ्या है। दोनों संन्यासी महानुभाव बैठते ही मुस्कराते हुए शास्त्रार्थ में प्रवृत्त हुए। दोनों संस्कृत में ही वार्तालाप कर रहे हैं। जीव-ब्रह्म की अभिन्नता और 'अहं ब्रह्मास्मि' इत्यादि तथाकथित 'महावाक्यों' के सत्यार्थ को लेकर गम्भीरता पूर्वक वाद चल रहा है। 6.30 बजे आरम्भ हुआ है यह वार्तालाप, परन्तु अब तो 11 बज गया है। भोजन के लिए योगी सन्तनाथ सूचना देने आए। महर्षि ने आनन्दवन जी और उनके शिष्यों को भोजन ग्रहण करने की विनती की। परन्तु आनन्दवन जी ने कहा कि जब तक इन प्रश्नों का निर्णय न हो जाएगा तब तक मैं भोजन नहीं करूंगा। भोजन किए बिना ही शास्त्रालाप पुन: अविरत चलने लगा। महर्षि ने चारों वेद एवं अन्य 60-65 ग्रन्थ अपनी सन्दूकों से निकलवाए और उनमें से अनेक प्रमाण-वाक्य आनन्दवन जी को दिखलाने लगे। दो बजे तक यही क्रम चलता रहा। दो बजे के पश्चात् दोनों उठ खड़े हुए और परस्पर कुछ बातें करने लगे। महर्षि के वेदशास्त्र अनुमादित एवं युक्तिपूर्ण पक्ष को सुनकर अब आनन्दवन जी को समाधान प्राप्त हो गया था। उन्होंने खड़े होकर अपने प्रिय शिष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा-मैंने दयानन्द जी के मत को स्वीकार कर लिया है। मैं आज पर्यन्त अद्वैत मतानुयायी था, मगर आज दयानन्द जी के दार्शनिक मत को मैंने हृदयंगम कर लिया है। वेदान्त का वास्तविक स्वरूप आज मेरी समझ में आ गया है। मेरे संशय निवृत्त हो गए हैं। मेरा मिथ्या ब्रह्मवाद उड़ गया है। इसलिए हे मेरे शिष्यो, अब आपको भी ऐसा ही करना उचित है। इस वक्तव्य के पश्चात् आनन्दवन जी बिना भोजन किए ही चले गए। उसके पश्चात् भी वे कभी-कभी सभा मण्डप में आते रहते थे, परन्तु कभी बैठे नहीं। मुस्कुराकर आनन्द से थोड़ी देर खड़े रहकर चले जाते थे। शास्त्रार्थ वाले दिन किसी के पूछने पर महर्षि ने उनके सम्बन्ध में कहा था कि -यह बड़े विद्वान् संन्यासी हैं। अब तक वे जीव-ब्रह्म को एक मानते थे, परन्तु अब हमारे समान जीव और ब्रह्म को पृथक्-पृथक् मानने लगे हैं।

(महर्षि दयानन्द जी के प्रामाणिक जीवन चरित्रों से संकलित) -भावेश मेरजा

नव सस्येष्टि एवं होली मिलन समारोह

नव सस्येष्टि एवं होली मिलन समारोह आर्य समाज अशोक विहार फेज-1 के तत्वावधान में नव सस्येष्टि एवं होली मिलन समारोह 25-27 मार्च 2016 के अवसर पर यजुर्वेद शतकम् यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।यज्ञ ब्रह्मा डॉ. आचार्य वागीश जी होंगे।

-सत्यपाल आर्य, संयोजक

गायत्री महायज्ञ एवं होली मिलन समारोह

आर्य समाज मन्दिर गुरु हरिकिशन मार्ग(रेलवे रोड) राजा पार्क चौक, शकूर बस्ती दिल्ली के तत्वावधान में गायत्री महायज्ञ एवं होली मिलन समारोह 25 मार्च 2016 को आयोजित किया जा रहा है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

21 मार्च 2016 से 27 मार्च, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24 मार्च 2016/ 25 मार्च, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 मार्च, 2016

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 1 का शेष

मदर टेरेसा की ...

सिंधिया, सोनिया गांधी और कई अन्य से आग्रह है कि आप जिस तरह से मदर टेरेसा का बखान कर उसे संत बता रहे हैं, उस रूप में नहीं बताये।'' उन्होंने दावा किया कि एक पुस्तक में मदर टेरेसा ने स्वयं कहा था कि वह लोगों को ईसाई धर्म में लाने के लिए काम करती हैं। लेखी ने कहा कि कृपया मदर टेरेसा पर नवीन चावला की पुस्तक पढ़ें जो कांग्रेस के वफादार रहे हैं और इसमें मदर टेरेसा ने साक्षात्कार के दौरान कहा कि कई लोग मुझे सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भ्रमित करते हैं, मैं सामाजिक कार्यकर्ता नहीं हूं। मैं जीसस की सेवा में हूं और मेरा काम ईसाइयत का विस्तार करना और लोगों को इससे जोड़ना है। अब यह सोचना किसका हैं कि आखिर ऐसी महिला क्या संत हो सकती है?

-राजीव चौधरी

विशेष सूचना

घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ

योजना संबंधी विशेष सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना प्रारंभ हुए एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। जिन महानुभावों ने इस योजना के अन्तर्गत यज्ञ करवाए हैं। वे अपने यज्ञमानों की सूची नाम, पता और मोबाईल नम्बर सहित तत्काल भिजवाने की कृपा करें। सबसे अधिक यज्ञ करवाने वाले आर्य महानुभावों/पुरोहितों को सभा की ओर से होली के शुभ अवसर पर सम्मानित किया जा सके। ये सूची आप ईमेल **aryasabha@yahoo.com** पर भेजें या 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज देंवे।

हवन-यज्ञ के लिए सर्वोत्तम प्रदूषण मुक्त

गाय के गोबर से तैयार समिधा

मात्र 25/- पैकेट (टिक्की व समिधा आकार में उपलब्ध)

प्राप्ति स्थान

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001 एवं सम्पर्क करें : मो. 09540040339

पाठकों से अनुरोध

आर्य सन्देश के पाठकों से अनुरोध है कि वे आर्य सन्देश सदस्यता शुल्क का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' की बजाए 'आर्य सन्देश' के नाम से ही प्रेषित करें।

-सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह